# ऋग्वेद संहिता

ऋग्वेद संहिता सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। पाश्चात्य किंवा भारतीय, सभी विद्वानो ने भाषा, भाव तथा प्राचीनता आदि अनेक दृष्टियों से उसके महत्व को स्वीकार किया है। चारो वेदो मे परिमाण की दृष्टि से भी यह सर्वाधिक विशालकाय है। परवर्ती ब्राह्मण साहित्य ने भी चारो वेदो मे से ऋग्वेद को अधिक महत्व दिया है। स्वयं ऋग्वेद के पुरुषसूक्त मे यज्ञरूपी परमेश्वर से सर्वप्रथम ऋचाओ का ही आविर्भाव हुआ; साम आदि की उत्पत्ति तो उसके ही बाद हुयी।

→ "सम्प्रति ऋग्वेद का दो प्रकार का विभाजन उपलब्ध होता है"—

(1) अष्टक क्रम
(2) मण्डल क्रम

(1) <u>अष्टक-क्रम</u> – इस क्रम की दृष्टि से सम्पूर्ण ऋग्वेद अष्टक, अध्याय, वर्ग तथा मंत्र-इस रूप में विभाजित है। पूरे ऋग्वेद में आठ अष्टक हैं और हर अष्टक में आठ अध्याय हैं। इस प्रकार ऋग्वेद में 64 अध्याय हैं। किन्तु प्रत्येक अध्याय में वर्गों की संख्या नियत नहीं है और न वर्ग में मंत्रो की संख्या सुनिश्चित है। समान्यता पाँच मं का एक वर्ग है; किन्तु किसी अष्टक के वर्ग मे एक मंत्र से किसी वर्ग में नौ मंत्र तक मिलते हैं। सम्पूर्ण ऋग्वेद में अष्टक, अध्याय, वर्ग एवं मंत्र हैं; परन्तु ऋ 8 का विभाजन 64 वैज्ञानिको 2006 द्वारा स्वीकार 10,552 नहीं किया गया

(2) मण्डल-क्रम— ऋग्वेद का यह विभाजन क्रम अपेक्षाकृत नवीन होने पर भी अधिक सरल, वैज्ञानिक एवं प्रमाणिक है। इस क्रम की दृष्टि से सम्पूर्ण ऋग्वेद मण्डल, सूक्त और ऋचाओ अथवा मंत्रो में विभक्त है। सम्पूर्ण ऋग्वेद में 10 मंडल है, इसी से कई ग्रंथो में ऋग्वेद "दशतयी" नाम से प्रसिद्ध है, ऋग्वेद का यह विभाजन निम्नांकित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

| मण्डल | सूक्तसंख्या | मंत्रसंख्या | ऋषि नाम |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 191 | 2006 | मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा आदि |
| द्वितीय | 43 | 429 | गृत्समद एवं वंशज |
| तृतीय | 62 | 617 | विश्वामित्र एवं वंशज |
| चतुर्थ | 58 | 589 | वामदेव एवं वंशज |
| पंचम | 87 | 727 | अत्रि एवं वंशज |
| षष्ठ | 75 | 765 | भारद्वाज एवं वंशज |
| सप्तम | 104 | 841 | वसिष्ठ एवं वंशज |
| अष्टम | 92+ "बालखिल्य सूक्त" 11 | 1716 | कण्व, भृगु, अङ्गिरस |
| नवम | 114 | 1108 | सोम पवमान (सोम विषयक मंत्र) |
| दशम | 191 | 1754 | त्रित, विमद, श्रद्धा, कामायनी आदि |
| | 1028 | 10552 | |

- प्रत्येक मण्डल में प्राथमिकता की दृष्टि से विशिष्ट देवों का एक क्रम रखा गया है - अग्नि, इन्द्र, मरुत, अश्विनौ तथा अन्य। यदि अग्नि के मंत्र उस मण्डल में नहीं हैं तो सर्वप्रथम इन्द्र को स्थान दिया जाता है। अग्नि व इन्द्र दोनों के अभाव में मरुत् का वर्णन एवं स्तुति सर्वप्रथम पाई जाती है।
- वंशप्रवर्तक ऋषि एवं उसके परिवारों से सम्बद्ध मंत्रों को एक मंडल में स्थान दिया गया।
- सोम संबंधी मंत्रों की संख्या प्रचुर होने के कारण उन समस्त सूक्तों को एक ही - नवम मण्डल - में समृहीत कर दिया गया और उसका नाम 'सोमपवमान' रख दिया गया।
- जो सूक्त किस ऋषिक्रम अथवा विषयक्रम से समुचितता समाहित नहीं किए जा सके, उन सूक्तों को पृथक् एवं अन्त में स्थान दिया गया

ऋग्वेद में 11 सूक्त ऐसे भी हैं जो बालखिल्यसूक्त नाम से प्रसिद्ध हैं। ये सूक्त 11 अष्टमण्डल में 49 सूक्त से लेकर 59 तक हैं तथा इन बालखिल्य सूक्तों में 80 कुल मंत्र हैं। 'खिल्य' का 11 शब्दार्थ तो होता है - पीछे से जोड़ा गया अथवा परिशिष्ट। किन्तु इस दृष्टि से भी इन सूक्तों के वास्तविक रूप का ज्ञान नहीं होता। न तो प्राचीन ऋषियों ने इसकी प्रामाणिकता को स्वीकार किया और न ही संग्रह कर्ताओं ने इन सूक्तों की गणना मण्डल और अनुवाकों का विभाजन करते समय की है। इन सूक्तों का न तो पदपाठ ही उपलब्ध होता है और न ही अक्षर गणना में इनका समावेश किया जाता है। किन्तु स्वाध्याय के समय इन बालखिल्य सूक्तों के पढ़ने का नियम अवश्य है

**ऋग्वेद का विन्यास क्रम** - भारतीय दृष्टि से सम्पूर्ण ऋग्वेद किंवा वेदमात्र ही नित्य है, जिनमें उपचयापचय नहीं हैं। इस दृष्टि के कारण आस्थावान् भारतीय यह विचार ही नहीं करते

Scanned with CamScanner

कि वेद मे किसी भाग की रचना पहले हुई अथवा अन्य उ परवर्ती समय में रचा गया। किन्तु इस भारतीय अवधारणा का सर्वप्रथम खण्डन पाश्चात्य विचारकों ने किया। तदनुसार वेद भी साहित्यिक रचनाएँ हैं। संहिता मे जिन ऋषियों के मंत्र संकलित हैं, वे सभी समकालीन नहीं थे। उनमें कुछ प्राचीन ऋषियों के मंत्र हैं तथा कुछ अन्य अर्वाचीन ऋषियों के मंत्र हैं। अतस्व ऋग्वेद के समस्त सूक्त अथवा मण्डल किसी एक ही समय की रचना न होकर भिन्नकालीन रचनाएँ हैं। पाश्चात्य विचारकों से सहमति प्रगट करते हुए प्रभृति कापित्य भारतीय विद्वानो ने भी यही स्वीकार किया है कि ऋग्वेद मे भिन्नकालीन अनेक मण्डल ही एकत्र संगृहीत कर दिए गए हैं। स्थूलता ऋग्वेद के तीन भाग दृष्टिगोचर होते हैं—

सर्वप्रथम द्वितीय से सप्तम तक के मंडल के सूक्तों का विन्यास हुआ। ऋग्वेद का यह भाग सबसे प्राचीन भी है और वर्ण्य विषय, देवताक्रम तथा अन्य तथ्यों मे भी प्रायः समरूप है। इन छहो मण्डलों मे सर्वप्रथम अग्नि की स्तुति है, उसके पश्चात् इन्द्र की स्तुति है और उसके बाद अन्य देवताओ की स्तुतियाँ की गई हैं, दूसरे से सातवें मण्डल तक सूक्तों की संख्या प्रायः बढ़ती ही गयी है।

ऋग्वेद के इस मूल भाग की रचना के उपरान्त प्रथम तथा अष्टम मण्डल की रचना हुई। इन दोनो मण्डलों मे कण्व ऋषि, उनके वंशजो तथा अन्य ऋषियों के मंत्र प्राप्त होते हैं। दोनो ही मंडलो मे प्रगाथ छन्द प्राप्त होता है। कुछ ऐसे मंत्र भी हैं जो कि प्रथम व अष्टक दोनो ही मण्डलो मे पाए जाते हैं।

ऋग्वेद के नवम् मण्डल के सभी मंत्र सोम विषयक हैं। वंशमण्डलो मे पवमान सोम विषयक मंत्रो का अभाव है,

Scanned with CamScanner

किन्तु नवम मण्डल के सोम विषयक मंत्रो के ऋषि वे ही हैं जो वंश मण्डलो के ऋषि हैं। प्रथम तथा अष्टक मण्डल में सोम संबंधी तीन सूक्त अवश्य प्राप्त होते हैं। अत: यह निष्कर्ष निकाल लेना अनुचित नहीं होगा कि छह मंण्डलो की रचना फिर प्रथम व अष्टक मण्डल तत्पश्चात नवम् मंडल की रचना की गई। नवम् मण्डल को अलग संगृहीत करने का एक यह कारण भी जान पड़ता है कि जहाँ अन्य मण्डलो के पुरोहित को 'होता' कहते हैं वहीं नवम् मण्डल के पुरोहित को "उद्गाता' कहते हैं।
ऋग्वेद का दशम मण्डल सर्वाधिक अर्वाचीन है। विषय, भाषा तथा परिमाण की दृष्टि से अन्य मण्डलो से भिन्न है। अत: इसका संकलन अन्य नौ मण्डलों के संगृहीत हो जाने के बाद ही हुआ। विभिन्न वंशो के विभिन्न ऋषियो ने इसके सूक्तो की रचना की है। दशम मण्डल में देवताओं की स्तुति से सम्बद्ध सूक्त अपेक्षाकृत बहुत कम हैं, लौकिक सन्दर्भो का समावेश अधिक है। नासदीय, पुरूष तथा हिरण्यगर्भ सूक्त मे दार्शनिक विचारों की प्रतिष्ठा हैं, तो विवाह और अन्तयेष्टि सूक्तो में इन दो भारतीय संस्कारो का विशद वर्णन है। इनके अतिरिक्त अनेक संवेदात्मक, दान स्तुति विषयक तथा प्रहेलिकात्मक सूक्तो का भी दशम मण्डल मे समावेश है।

• <u>ऋग्वेद की शाखाएँ</u> - पतंज्जलि ने महाभाष्य के पस्पशाह्निक मे चारो वेदो की विभिन्न शाखाओं का उल्लेख किया है, जिसमें ऋग्वेद की 21 शाखाएँ कही गयी हैं। किन्तु शौनक ऋषि के 'चरणव्यूह' ग्रन्थ मे ऋग्वेद की 5 प्रमुख शाखाओं का ही उल्लेख है

Scanned with CamScanner